तित्थयर

जैन भवन

वर्ष : २४ अंक : ७
अक्टूबर २०००

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २४ अंक - ७, अक्टूबर २०००

॥ जैन भवन ॥

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : **Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें –
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृ. सं
१.	प्रजातन्त्र - महावीर	- लता बोथरा	२९१
२.	सराक जाति का संक्षिप्त इतिहास	-श्री अमरेन्द्र कुमार सराक	३००
३.	मलयासुन्दरी चरित्र	-	३०३
४.	हस्तिनापुर	-श्री अमरचन्द्र, एम० ए०	३०८
५.	भगवान महावीर	-उपाध्याय अमरमुनि जी	३१३

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :
Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

प्रजातन्त्र - महावीर

पूर्वानुवृत्ति

इस अनुबन्ध के सिद्धान्त की पुष्टि महाभारत के शान्ति पर्व में युधिष्ठिर द्वारा भीष्म से पूछे गये एक प्रश्न के उत्तर से भी होती है। युधिष्ठिर भीष्म से पूछते हैं कि लोक में जो यह राजा शब्द है उसकी उत्पत्ति कैसे हुई जब कि वो साधारण मनुष्य की तरह है। इस प्रश्न का उत्तर देते हुये भीष्म कहते हैं कि पहले न राजा था ना राज्य और ना ही दण्ड व्यवस्था। प्रजा धर्म का पालन करती थी। कालान्तर में धर्म का पतन होने से लोग मोह तथा लोभ के अधीन होने लगे। अराजकता फैलने लगी तब लोग बह्मा जी के पास गये और उनसे राजा देने की प्रार्थना की। इस प्रकार **महाभारत में** राजपद दैवी नियुक्त माना गया है। **बौद्धायन धर्म सूत्रों** में भी **षडभाग** लेकर राजा प्रजा की रक्षा करता है ऐसा उल्लेख है। समाज में चोरी का प्रवेश होने पर लोगों ने मिलकर यह अनुबन्ध किया था। **कौटिल्य के अर्थ शास्त्र** में भी इसी प्रकार का वर्णन मिलता है कि प्रजा मत्स्य न्याय से पीड़ित हुई तब मनु को उन्होंने अपना राजा अनुबन्ध द्वारा बनाया। महाभारत में जहां ब्रह्मा द्वारा राजा की नियुक्ति का वर्णन है वहीं मत्स्यपुराण में भी इसी प्रकार का उल्लेख मिलता है।

इस प्रकार वैदिक पुराणों, महाभारत आदि में सृष्टि के प्रारम्भ में स्वर्ण युग का उल्लेख है। जैन ग्रन्थों में भी सृष्टि के आदिकाल को स्वर्ण युग माना गया है। स्वर्णयुग तथा राज्य की उत्पत्ति सम्बन्धी सिद्धान्तों में सामाजिक समझौते के सिद्धान्त की मान्यता थी अर्थात् राज्य का निर्माण प्राकृतिक अवस्था में रहने वाले व्यक्तियों ने आपसी समझौते के आधार पर किया था। वैदिक ग्रन्थों में **एतरेय ब्राह्मण** के अनुसार देवताओं और असुरों के मध्य युद्ध में देवताओं की बराबर हार होने से देवताओं ने अपनी हार के कारणों पर विचार किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि उनकी पराजय का कारण राजा का न होना है अतः उन्होंने

सोम को अपना राजा बनाया और तब असुरों पर विजय प्राप्त की। यह कथन राज्य को मानव निर्मित संस्था सिद्ध करता है। इतिहासकार **के. पी. जायसवाल** के अनुसार राजतत्व मनुष्यनिर्मित संस्था है जबकि महाभारत आदि धर्म शास्त्रों में तथा वैदिक पुराणों में राजा की उत्पत्ति दैवी रूप बतलायी गयी है। देवताओं द्वारा नियुक्त राजा का उल्लंघन पाप माना जाता था। मनु स्मृति में लिखा है कि राजा बालक हो तब भी उसका अपमान नहीं करना चाहिये क्योंकि वह मनुष्य रूप में देवता है।

वैदिक ग्रन्थों में भी कहीं-कहीं राजा के चुने जाने का उल्लेख मिलता है। अथर्ववेद में लिखा है - **"हे राजन् जनता के सामने आइये। आप अपने निर्वाचन करने वाले के अनुकूल हैं। इस पुरुष ने आपको आपके योग्य स्थान पर यह कह कर बुलाया है कि इसे देश की स्तुति करने दो।"**

एक अन्यत्र स्थान पर लिखा है - "हे राजा राज्य कार्य चलाने के लिये प्रजा तुझे निर्वाचित करे, इन पांचों प्रकाश युक्त दिशाओं में प्रजा तुझे निर्वाचित करे।" और भी अनेक स्थानों पर इस प्रकार के उल्लेख हैं जहां राजाओं के चुने जाने का वर्णन है। **"जहां तू है। मैंने तुझे चुना है।"** एक जगह पदच्युत राजा के पुनः निर्वाचन का भी उल्लेख आया है **"पुनः निर्वाचित राजा तेरे विरुद्ध पक्ष के लोग भी तेरी सहायता करें तेरे मित्रों ने तुझे फिर निर्वाचित किया है"** इन मान्यताओं से यह विदित होता है कि जिस प्रकार राजा को निर्वाचित करने का अधिकार प्रजा को था वैसे ही उसे शासनच्युत करने का अधिकार भी था। अगर राजा अयोग्य, मूर्ख, अत्याचारी हो तो उसे हटाकर उसके स्थान पर अन्य सुयोग्य राजा को राजगद्दी पर बैठा दिया जाता था। महाभारत के उद्योग पर्व में लिखा है कि कुरु लोगों द्वारा राजा चुना गया था क्योंकि वह धर्मात्मा था। एक अन्य उल्लेख से यह स्पष्ट होता है कि कुष्ठ रोगी दैवापि को सिंहासन पर बैठने से रोक कर शान्तनु को राजगद्दी पर बैठाया गया था। ययाति ने भी अपने बड़े पुत्र यदु को राजगद्दी पर बैठाना चाहा पर लोगों के विरोध के कारण अपने भतीजे को युवराज बनाया। महाराज दशरथ ने भी रामचन्द्र जी को सिंहासन देने के पूर्व सभा-

समिति द्वारा अनुमति ग्रहण की थी। ई० सन् १२५ वर्ष में राजा रुद्रदमन का चुनाव जनता द्वारा हुआ था। ई० सन् ७३० में एक सिपाही के लड़के गोपाल ने जनता के अनुरोध पर राजपद स्वीकार किया था जो बंगाल के पाल वंश का जनक माना जाता है।

प्राचीन भारत में प्रजातन्त्र के भावों का किसी न किसी रूप में आविर्भाव दिखलायी देता है। यद्यपि उस समय राजसत्ता का अस्तित्व था पर राजा जन प्रतिनिधियों की सलाह से कार्य करता था।

ऋग्वेद ३/३८/८ में कहा गया है कि "राजा तीन विस्तृत सभाएँ करते हैं तथा उन सभाओं को स्वयं जाकर सुशोभित करते हैं।"

ऋग्वेद -२४-१५- "जो राजा अनेक स्तम्भों से युक्त उत्तम दृढ़ हैं वे सभा में बैठते हैं।" इसी प्रकार अथर्ववेद में स्पष्ट वर्णित है कि जो राजा प्रजातन्त्र से चलता है प्रजा, समिति, सेना और ऐश्वर्य उसके अनुकूल चलते हैं।

वैदिक ग्रन्थों में और भी अनेक मंत्र मिलते हैं जिनमें प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था का उल्लेख किया गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि वेद-कालीन समय में प्रजातन्त्र का अस्तित्व किसी ना किसी रूप में अवश्य ही विद्यमान था।

वेदकाल के बाद जैन शास्त्रों में वर्णित नागकुमार चरित और करकण्डू चरित में उस समय की राजनैतिक अवस्था का चित्रण मिलता है। अन्तिम चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त के बाद छोटे-छोटे राज्य बन गये तथा जनता खास अवसरों पर एक योग्य व्यक्ति को अपना राजा चुन लेती थी जो जनता के हित के लिये राज्य करता था। दत्तपुर की प्रजा ने करकण्डू को अपना राजा चुना था। करकण्डू चरित में इसका आख्यान मिलता है। प्राचीन भारतीय मान्यता भी इसी का समर्थन करती है कि पहले एक व्यक्ति को जनता राजा चुन लेती है जो जनता के हित में राज्य करता था। महाभारत में वेण और पृथु की कथा से भी इसी कीं पुष्टि होती है। जैन शास्त्रों में भी सर्वप्रथम राजाओं का जनता द्वारा चुना जाना वर्णित है। महाभारत के शान्ति पर्व के अध्याय १०७ में गणराज्यों के विषय में

काफी जानकारी मिलती है तथा इसमें गणराज्यों को बनाये रखने पर जोर भी दिया गया है।

ऋग्वेद में समिति और परिषद शब्द मिलते हैं जो यह स्पष्ट करते हैं कि प्रजासत्तात्मक राज्य की नींव वैदिक काल में पड़ चुकी थी। भगवान महावीर का युग प्रजातन्त्र और राजतन्त्र के सह अस्तित्व का युग था।

भगवान महावीर के समय मध्यदेश के कुछ वणिक दक्षिण गये। दक्षिण के राजा को उन्होंने उपहार दिये तो उसने पूछा वहां कौन राजा है तब उन्होंने कहा महाराज कुछ देशों में तो गण का शासन है और कुछ देशों में राजाओं का (बौद्ध ग्रन्थ)। आचारंग सूत्र में छः प्रकार की शासन प्रणालियों का उल्लेख मिलता है। (१) अराजकराज्य (२) गणराज्य (३) यौवराज्य (४) द्वैराज्य (५) विरुद्धराज्य (६) वैराज्य ।

अराजक राज्य का व्युत्पत्ति अर्थ है बिना शासन वाली शासन प्रणाली परन्तु जैनों के अनुसार एक राजा के मरने तथा दूसरे राजा के चुने जाने के बीच की स्थिति ही अराजक राज्य कहलाता है। अराजक राज्य के दो मुख्य आधार हैं। व्यक्ति की महत्ता और सामाजिक समझौते के आधार पर नियमों का गठन। अराजक राज्य की विफलता के दो कारण हैं नियंत्रण हीनता तथा व्यक्तिवादी महत्ता। महाभारत के शान्ति पर्व में भी इसी प्रकार की प्रणाली के संकेत मिलते हैं। आजकी भाषा में इसे सत्ताहीन शासन प्रणाली कह सकते हैं।

गणराज्य का अर्थ समूह का राज्य गणराज्यों में मानवीय समानता का सिद्धान्त था तथा शासक जनता का प्रतिनिधि होता था।

यौवराज्य युवराज द्वारा अधिष्ठित राज्य को यौवराज्य कहा जाता है। ऐसे अनेक जगह वर्णन मिलते हैं जहां राजा की मृत्यु होने पर युवराज यदि छोटी अवस्था में है तो उसके वयस्क होने तक राज्य संचालन का दायित्व एक संरक्षण परिषद् को होता है। यद्यपि शासन परिषद संचालित करती है पर राज्य युवराज का कहलाता है।

द्वैराज्य इसका अर्थ है दो राजाओं का शासन। भारत में ऐसे

अनेक प्रमाण मिलते हैं (१) अवन्ती में बिंद और अनुविंद दो राजाओं का संयुक्त शासन था। नेपाल में ६-७वीं शताब्दी में लिच्छवी और ठाकुर वंश एक साथ शासन करते थे।

वैराज्य- राजा विहीन शासन प्रणाली को वैराज्य कहा जाता है यहां समस्त प्रजा को राज्य संचालन का अधिकार था। कौटिल्य ने इसे निकृष्ट शासन प्रणाली माना है क्योंकि इसमें प्रत्येक व्यक्ति अपना देश बेच सकता है।

विरुद्ध राज्य- इसका अर्थ है जहां दो राजाओं का एक दूसरे के राज्य में आना-जाना निषिद्ध हो। इसे विभिन्न दलीय प्रशासन प्रणाली भी कहा जाता है जहाँ राज्य सत्ता विशेष व्यक्ति के हाथ में न होकर प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में हो। इस प्रकार के शासन के विधान का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण अन्धक वृष्णि का प्राप्त होता है महाभारत में उल्लेख मिलता है कि यादव, कुम्कुर, भोज आदि अन्धक वृष्णि संघ के रूप में संगठित हुए जिनके नेता अक्रूर, गद, प्रद्युम्न, आदुक, आदि थे। उग्रसेन अंधको के नेता तथा कृष्ण वृष्णियों के नेता थे। राज्य संचालन में दोनों का हाथ रहता था।

बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय तथा जैन ग्रंथ भगवती सूत्र के अनुसार भगवान महावीर के समय १६ गणराज्यों का अस्तित्व था। बौद्ध सूत्रों में ये नाम इस प्रकार हैं १. काशी २. कौशल ३. अंग ४. मगध ५. वज्जि (वृज़ि) ६. भल्ल ७. चेतिय (चेदि) ८. वत्स ९. कुरु १०. पंचाल ११. मच्छ (मत्स्य) १२. शूरसेन १३. अस्सक (अश्मक) १४. अवन्ति १५. गान्धार १६. कम्बोज।

भगवती सूत्र में ये नाम कुछ भिन्न रूप में हमें मिलते हैं।

१. अंग २. बंग ३. मगध ४. मलय ५. मालव ६. अच्छ ७. वत्स ८. कोच्छ (कच्छ) ९. पाढ (पाण्डय या पाण्डू) १०. लाढ ११. वज्जि १२. मोलि (मल्ल) १३. काशी १४. कौशल १५. अवाह १६. सम्मुत्तर। इनमें काशी कौशल मगध, अवन्ति तथा वज्जि सर्वाधिक शक्तिशाली गणराज्य थे।

गण का अर्थ होता है समूह अतः गणराज्य का अर्थ है समूह का राज्य या बहुत लोगों द्वारा संचालित राज्य। कुछ पाश्चात्य विद्वानों फ्लीट आदि ने गण शब्द का अर्थ Tribe माना है परन्तु यह सही नहीं है। जैन शास्त्रों के अनुसार-प्रयोजन उत्पन्न होने पर सारे व्यक्ति गण बनाकर एक नेता निर्वाचित कर लेते हैं यही नेता गणपति कहलाता है और उसके द्वारा संचालित शासन गणराज्य कहलाता है। गणराज्यों में मानवीय समानता का सिद्धान्त लागू था। जो व्यक्ति वीर, बुद्धिमान, धैर्यवान होता था वही शासक निर्वाचित होता था।

भगवान महावीर के चरित्र दर्शन में वैशाली गणतन्त्र का बार-बार उल्लेख आता है। भगवान महावीर की माता त्रिशला वैशाली के गणपति चेटक की बहिन थी। आवश्यक चुर्णि में इसका उल्लेख मिलता है तथा भगवान महावीर के बड़े भाई नन्दीवर्धन की पत्नी चेटक की पुत्री थी। महावीर की माता के तीन नाम जैन आगमों में मिलते हैं। त्रिशला, विदेह दिन्ना और प्रियकारिणी। महावीर का भी एक नाम विदेहदिन्न है अर्थात् विदेह दिन्ना। त्रिशला का पुत्र विदेह दिन्न (महावीर),

भगवान महावीर के पिता वैशाली के उपनगर कुंडग्राम के शासक थे। आगमों में कहीं-कहीं महावीर को वैशालिक या वैशालीय भी कहा गया है। कल्पसूत्र के अनुसार भगवान महावीर ने १२ चातुर्मास वैशाली में किये थे बुद्ध ने सर्वप्रथम भिक्षुणी संघ की स्थापना भी वैशाली में की थी। लिच्छिवियों के निमन्त्रण पर बुद्ध ने कहा था "हे भिक्षुओं! देव सभा के समान इस सुन्दर लिच्छिवी परिषद को देखो।" ए. एन उपाध्याय ने लिखा है The working of the Vajjan Confederation so vividly described in the Deghanikaya is an unigue example of its kind and essentially Contributed to the efficiency and Solidarity of the republic. Further Vaishali was a commercial capital where seals were issued by there classes of guilds namely Bankers, traders and artisans. When Fa-Hien visited India (A.D. 399-414).

यह नगर ९०० मील की परिधि में बसा हुआ था इस नगर की सुन्दरता का वर्णन बुद्ध ने करते हुए अपने शिष्यों से बार-बार यहां आने की बात कही है।

It was an important religious, Political and commercial centre but it fall began in the next three Centuries and what Huien-Tsang (A. D. 635) saw there was more or less in ruins.

(Mahavir and his Philosophy of life)

बुद्ध शाक्य गणराज्य से सम्बन्धित थे उन्होंने अपने संघ का निर्माण वैशाली गणतन्त्र के आदर्श पर ही किया था। According to the Mahavastu Buddha Sought his first teacher in Alara and Uddaka at Vaishali and even started his life as a Jain under their teachings. अन्य गणतन्त्रों का उल्लेख हमें पाणिनी व्याकरण के सूत्रों या कुछ सिक्कों, मुद्राओं आदि से भी मिलता है। लेकिन वैशाली गणतन्त्र का बौद्ध और जैन ग्रन्थों में काफी विवरण मिलता है। वैशाली वज्जि संघ की राजधानी थी। यह वज्जि संघ आठ कुलों (विदेह, ज्ञातृक, लिच्छवी, वृज्जि, उग्र, भोग, कौरव तथा एक्ष्वाकू) के मेल से बना था जिसमें लिच्छवी और वज्जि प्रमुख थे। यद्यपि पाणिनी तथा कौटिल्य ने वैशाली औंर वाज्जि को अलग-अलग माना है लेकिन बुद्ध ने दोनों का प्रयोग पर्यायवाची अर्थ में ही किया है। महापरिनिर्वाण सुत्त में बुद्ध कहते हैं कि जब तक वज्जि लोग सात अपरिहारणीय धर्मों का पालन करते रहेंगे उनका पतन नहीं होगा। संयुक्तनिकाय के कलिंगरसुत्त में बुद्ध कहते हैं कि जब तक लिच्छिवी लोग लकड़ी के बने तख्तों पर सोयेंगे और उद्योगी बने रहेंगे आजातशत्रु उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। पाणिनी और कौटिल्य के ग्रन्थों से वज्जिगणतन्त्र की महत्ता का पता चलता है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में लिखा है -काम्बोज, सुराष्ट्र आदि क्षत्रिय श्रेणियाँ कृषि, व्यापार तथा शास्त्रों द्वारा जीवन यापन करती थी और लिच्छवी, वज्जि, मल्लक, कुरु, पांचाल आदि श्रेणियां राजा के समान जीवन बिताती थीं। रामायण तथा विष्णु पुराण के अनुसार वैशाली की स्थापना इक्ष्वाकू पुत्र विशाल द्वारा की गयी थी। यहां के समृद्धि और वैभव की प्रशंसा तिब्बती ग्रन्थों में भी मिलती है तिब्बती विवरणानुसार-वैशाली में तीन जिले थे। पहले जिले में स्वर्ण शिखरों से युक्त ७००० घर

थे। दूसरे जिले में चांदी के शिखरों से युक्त १४००० घर थे तथा तीसरे जिले में ताँबे के शिखरों से युक्त २१००० घर थे। बैशाली की जनसंख्या १६८००० थी।

महावीर युग में जनपदों का फैलाव पूरे भारत में था। ये जनपद सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक जीवन की ईकाई थे। अतः इस युग को महाजनपद युग भी कहा जा सकता है। पांचाल एक प्रमुख जनपद माना जाता था। जनपदों में दो संस्थाओं का प्रचलन था सभा और परिषद। पाणिनी के युग में दो प्रकार के शासनतन्त्र थे राजंतन्त्र और संघ तंत्र। तीन प्रकार की परिषद होती थी। सामाजिक परिषद, विद्या सम्बन्धी परिषद् तथा राजनैतिक परिषद् जिससे सम्बन्धित परिषद् मन्त्रि परिषद् होती थी। मन्त्रिपरिषद् के अतिरिक्त एक सभा होती थी जिसे राजसभा कहा जाता था। राजतंत्र तथा गणराज्यों में परस्पर संघर्ष चलता था। आजातशत्रु द्वारा वैशाली गणतन्त्र पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया गया था। वैशाली एक शक्तिशाली गणतन्त्र थी और आजातशत्रु अनेक प्रयत्नों के बावजूद जब सफल नहीं हुआ तब उसने अपने अमात्य वर्षकार को बुद्ध के पास भेजा और कहा कि भगवान बुद्ध से कहो कि वज्जिगण चाहे कितना ही शक्तिशाली क्यों न हों मैं उनका उन्मूलन करके पूर्ण विनाश कर दूंगा। इसके बाद तथागत की प्रक्रिया सुनो और मुझे आ कर बताओ। आजातशत्रु के अमात्य के वचन सुन बुद्ध ने अपने शिष्य आनन्द को कहा - हे आनन्द (१) जब तक वज्जि पूर्ण रूप से निरन्तर परिषदों का आयोजन करते रहेंगे।(२) जब तक वज्जि संगठित होकर मिलते रहेंगे, संगठित होकर उन्नति करते रहेंगे, कर्त्तव्य कर्म करते रहेंगे। (३) जब तक वे अप्रज्ञप्त विद्याओं को स्थापित न करेंगे, स्थापित कानूनों का उल्लंघन न करेंगे तथा पूर्व काल में स्थापित प्राचीन वज्जि विद्याओं का अनुसरण करते रहेंगे। (४) जब तक वे वज्जि पूर्वजों तथा नायकों का सत्कार, सम्मान पूजा तथा समर्थन करते रहेंगे उनके वचनों को ध्यान से सुनकर मानते रहेंगे। (५) जब तक वे वज्जिकुल की महिलाओं का सम्मान करते रहेंगे और कोई भी कुल स्त्री या कुल

कुमारी उनके द्वारा बल पूर्वक अपहृत या निरूद्ध नहीं की जायेगी। (६) जब तक वे नगर या नगर से बाहर स्थित चैत्यों का आदर एवं सम्मान करते रहेंगे। (७) जब तक वज्जियों द्वारा अरिहन्तों की रक्षा सुरक्षा एवं समर्थन प्रदान किया जायेगा तब तक वज्जियों का पतन नहीं होगा अपितु उत्थान होता रहेगा।

इस प्रकार बुद्ध ने ये कल्याणकारी सात धर्म वज्जियों के बताये। महापरिनिर्वाणसुत्त के इस उपर्युक्त उद्धरण से वैशाली गणतन्त्र की उत्तम व्यवस्था एवं अनुशासन की पुष्टि होती है। इन्हीं ७ धर्मों को कुछ परिवर्तन करके गौतम बुद्ध ने अपने संघ के लिये भी अपनाया। इस प्रकार हम देखते हैं कि लिच्छवियों के गुणों ने उन्हें महान बनाया उनमें आत्म संयम की भावना थी। संयुक्तनिकाय के अनुसार लिच्छिवी लकड़ी के बने तख्त पर सोते थे, कर्तव्यनिष्ठ थे। जब तक ये गुण उनमें रहे आजातशत्रु उन्हें पराजित नहीं कर सका था।

लिच्छिवयों के मुख्य अधिकारी राजा, उपराजा, सेनापति, मांण्डागारिक थे तथा इनसे ही मंत्रिमंडल बनता था, केन्द्रीय संसद का अधिवेशन नगर के मध्य में स्थित पन्थागार में होता था। शासन शक्ति संसद के ७७०७ सदस्यों में निहित थी। ललितविस्तर काव्य में लिखा है कि - इन वैशालिकों में उच्च, मध्य, वृद्ध एवं ज्येष्ठ जनों के सम्मान के नियम का पालन नहीं होता था क्योंकि प्रत्येक स्वयं को राजा समझता था। लिच्छवियों के वैदेशिक सम्बन्धों का नियन्त्रण नौ सदस्यों की परिषद द्वारा होता था जिसका वर्णन जैन और बौद्ध दोनों साहित्यों में मिलता है। आजातशत्रु के आक्रमण के मुकाबले के लिये इन्हें पड़ोसी राज्यों के साथ मिलकर महासंघ बनाना पड़ा था। जिनमें नवमल्ल, काशी, कौशल सम्मिलित थे। न्याय व्यवस्था अष्टकुल सभा के हाथ में थी। विभिन्न प्रकरणों पर गणराज्यों के निर्णय का विवरण सावधानी पूर्वक रखा जाता था। जिसमें अपराधी नागरिकों के अपराधों तथा उन्हें दिये गये दण्डों का विवरण अंकित रहता था। उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सूत्रधार कहलाते थे। अन्तिम अपील के लिये अष्टकुलक होते थे। यदि सभी न्यायालय किसी को अपराधी ठहराते तो मन्त्रिमंडल का निर्णय अन्तिम होता था।

क्रमशः

सराक जाति का संक्षिप्त इतिहास

श्री अमरेन्द्र कुमार सराक

मानभूम जिला अर्थात वर्द्धमान, धनबाद, पुरुलिया, बोकारो,का पूर्वी हिस्सा एवं सिंहभूम का चान्डेल इचागढ़ एवं पट यह तीन थाने मिलाकर मानभूम जिला गठित हुआ था।

बिहार बंगाल के सीमान्त से अजय नदी के दोनों किनारें रुपनारायनपुर से लेकर तारकेश्वर तक जो लौह मैला का ढेर देखने को मिलता है उनके भग्नावशेषों से यह पता चलता है कि सराकों या श्रावकों द्वारा ही यहां पर लौह निष्कासन किया गया था। बंगाल के एक इतिहासकार डा. रमेशचन्द्र मजूमदार ने History of Bengal vol-1PP-409-10 में स्वामी भद्रबाहु को राढ़ बंगाल के निवासी तथा द्वितीय लौहाचार्य के रुप में चिह्नित किया है। मगर जैन शास्त्र के अनुसांर भद्रबाहु दामोदर नदी के दक्षिण तरफ के ही किसी स्थान के थे। ७वीं ई० में हुआंगसेन (चीनी परिब्राजक) ने अपने भारत भ्रमण के बारे में एक जगह लिखा है किः- ---- This is the area where the ancient Sravakas who were clearly Jains lived and practised the earliest known smelting of iron ore, Hiuen T sang mentioned this area as the safa provines. The origin of the Safa is not known, but it appears to be clearly associated with Jainsim----------It is this province of Safa which is identified with a part of Radhesha which was visited by Mahavira.

उपर्युक्त साफा प्रदेश की राजधानी के बारे में Mr. Beglar बताते हैं कि यह साफा प्रदेश की राजधानी दलमी से १० मील उत्तर पश्चिम में थी। Mr. Hibert के अनुसारः- Hibert had identified dalmi as the capital of Safa Province and the entire Dalmi Hills are full of Jaina antiquities . It is the province of Safa which is identified with a part of Radhsha which was visited by lord Mahavira.

हुआंगसान के विवरण के अनुसार प्राचीन काल में सराक लोग जो लौह गलाने का काम करते थे वह स्थान दामोदर नदी तथा बंगाल के पुरुलिया जिला के दलमी पहाड़ के बीच में ही था जहां पर महावीर स्वामी का आगमन भी हुआ था। कल्पसूत्र में भी यह लिखा है कि महावीर स्वामी ने अनार्य देश में एक चौमासा किया और यहीं साफा प्रदेश में ही सम्भवतः उनका चौमासा हुआ था और कल्पसूत्र के रचयिता भद्रबाहु स्वामी का भी इसी क्षेत्र में सराकों के पूर्वज किसी श्रावक के घर में जन्म हुआ था।

हुआंग-सांग के भारत भ्रमण कहानी के जरिये **General cunninghum.** ने यह मन्तव्य दिया है कि उनके भारत में आने के पहले अर्थात ७वीं शताब्दी के पहले, पूर्व में मिदनापुर, पश्चिम में सिरगूजा, उत्तर में दामोदर एवं दक्षिण में वैतरणी नदी के बीच किसी जगह एक राज्य था जहां पर जैन धर्म का विकास अर्थात जैन सभ्यता संस्कृति का विकास हुआ था और वह जगह निश्चित रूप से दामोदर किनारे का क्षेत्र शिखर भूम तथा पांचेत नाम से परिचित था। उसी जगह के बारे में उन्होंने लिखा है कि सम्भवतः ह्वेन-सांग सभी स्थान पर पहुंचने में समर्थ नहीं हुए थे नहीं तो साफ-साफ लिखने में समर्थ होते। मगर ७०० ई० के पहले का इतिहास जिस किसी ने भी लिखा है वह श्रुति, दन्तकथा खण्डहर आदि से ही लिखा है। और उनलोगों के लेखों से यह साफ जाहिर है कि दामोदर नदी के किनारे सराकों के पूर्वजों द्वारा एक शिखर राज्य तथा पांचेत क्षेत्र की स्थापना के साथ-साथ एक सभ्यता का विकास किया गया था जो सभ्यता संस्कृति श्रावक धर्म अर्थात जैन धर्म पर आधारित थी।

दामोदर नदी के किनारे के इस हिस्से का उस समय नाम दूसरा ही कुछ रहा होगा। छोटानागपुर नाम तो पीछे पड़ा है। यहीं दामोदर किनारे आकर सराकों के पूर्वज ईसा के ६०० वर्ष पूर्व बसे थे। उनलोगों के आगमन के पश्चात् ही गांव बगैरह बसा। इस क्षेत्र पर किसी सभा का अधिकार इसलिये नहीं था क्योंकि यह क्षेत्र किसी भी दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं था। प्राचीन काल में मिदनापुर से लेकर इस इलाके तक

के क्षेत्र को जंगल महल कहा जाता था। सराक लोगों का यहां आने के पश्चात् अनुमानतः ५०० ईसवी पूर्व इस जगह का नाम पार्श्वनाथ पर्वत के नामानुसार शिखर या शिखर राज्य पड़ा। महावीर स्वामी के समय उत्तर बिहार पर्वत गंगा के उत्तर में वज्जि संघ के राज्य की स्थापना हो चुकी थी। उन राज्यों का शासन गणतान्त्रिक पद्धति से होता था। सम्भवतः उसी पद्धति का अनुकरण कर शिखर राज्य नामक जंगल महल के पहले राज्य में सराक जाति के पूर्वजों द्वारा गणतान्त्रिक पद्धति से शासन व्यवस्था का प्रचलन किया गया था। शिखर राज्य की स्थापना के पश्चात् इस जंगल महल में भूम युम १८ राज्यों की स्थापना हुई थी। जैसे धलभूम, सिंहभूम, वराहभूम, मानभूम, आदि। उन राज्यों में कुछ राज्यों के साथ सराक जाति के पूर्वजों का सम्बन्ध जुड़ा हुआ था। तथा शिखर राज्य का नाम शिखर भूम पड़ने के पश्चात् ही उन राज्यों की स्थापना हुई थी।

एक समय शिखर राज्य का विस्तार काफी दूर तक हुआ था अर्थात् जैन सराकों द्वारा शिखर राज्य की गणतान्त्रिक शासन व्यवस्था को देख कर अगल बगल की सारी जनता प्रभावित हुई थी। इस प्रजातान्त्रिक शासन पद्धति को अपनाते हुए उस राज्य के साथ अगल-बगल के सभी राज्य या क्षेत्र मिल गये थे। आगे चलकर शिखर राज्य छोटा हो गया और वर्द्धमान के पश्चिम में दामोदर तथा अजय नदी के बीच वाले क्षेत्र में सीमित रह गया। उस राज्य पर काशीपुर (पुरुलिया) के राजा के पूर्वज दामोदर प्रसाद ने ८७ ई० में कब्जा कर लिया। उसी समय उन्होंने शिखर राज्य का नाम शिखर भूम रखा। शिखर राज्य पर अधिकार करने के कारण अपने नाम के साथ भी शिखर शब्द जोड़ कर दामोदर शिखर बन गये।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

पुर्वानुवृत्ति

आपके दिल में इस बात को जानने की जिज्ञासा पैदा हुई होगी कि वह वीणा वादक कौन है? और इन तमाम कार्यों की योजना करानेवाला वह सिद्धज्योतिषी जो इस समय गुम है कौन था? आपकी इस उत्कंठा को शान्त कराने के लिये इस विषय का थोड़ा सा खुलासा हम यहाँ पर कर देते हैं। वह अन्य कोई नहीं था परन्तु इसी कथानक का मुख्य पात्र महाबल कुमार ही है। मलया कुमारी के हाथ की अंगूठीवाला घास का पुला हाथी के मुख में देकर आगे चलते हुए अपने आपको छिपाने के लिये महाबल ने सिद्धज्योतिषी का वेश धारण किया था, और उसी वेष के द्वारा उसने राजा को मृत्यु के मुँह से बचाया था। उस समय सिद्धज्योतिषी के सिवा मलया सुन्दरी जीवित है; यह बात अन्य किसी के वचन पर राजा को विश्वास आना अशक्य था। मलयासुन्दरी को वैसी ही दशा में महाराजा बीरधवल को सुपुर्द कर देना यह भी उस वीर युवक के लिये हितकर न था; और वैसा करना मलयासुन्दरी के लिये प्रतिष्ठा या गौरव बढ़ानेवाली बात भी न थी इस प्रकार अनेक बातों पर विचार कर समयानुसार उचित समझकर ही राजकुमार ने सिद्धज्योतिषी का रूप धारण किया था। अपना वह प्रपंच प्रगट न हो या उस परिस्थिति में रहने से राजकुमारी का पाणिग्रहण करना कठिन होगा इस कारण अब वह स्वयंवर मंडप में से गुम होकर और दिव्य प्रभावशाली गुटिका के प्रयोग से अपना रूप परिवर्तन कर वीणा बजानेवाले के वेश में मंडप में आ बैठा था। दूसरे अन्य किसी रूप में उस सभा में स्थान मिलना मुश्किल था। तथा उसने राजकुमारी के साथ प्रथम से ही यह संकेत भी किया हुआ था कि जब मैं वीणा बजाऊं तब तुम यंत्र प्रयोग से लगाई हुई अन्दर की कील को खींच लेना। इससे स्तंभ की दोनों फाड़े स्वयं खुल जायेंगी। इनसब कारणों से महाबल कुमार को वीणा वादक का वेष धारण करना पड़ा था। साथमें कुछ भी परिवार न होने के कारण अनेक

राजकुमारों से भरे हुए स्वयंवर मंडप में एकाकी असली रूप में प्रगट होना उचित नहीं था।

मलया सुन्दरी स्वयंवर मंडप में -मलयासुन्दरी को स्वयंवर मंडप में देखकर सारी राजसभा आश्चर्य में पड़ गई। उसके शरीर पर कपूर चंदन, कस्तूरी आदि सुगंधित पदार्थों का विलेपन किया हुआ था। सुन्दरवस्त्र और दिव्य अलंकार पहने हुई थी। उसके वक्षस्थल पर लक्ष्मी पुंजहार शोभा पा रहा था। मुख में पान का बीड़ा और दाहिने हाथ में वरमाला धारण की हुई थी। मलया सुन्दरी को अकस्मात् इस अलंकृत अवस्था में देख महाराज बीरधवल और रानी चंपकमाला के हर्ष का पार न रहा। महाराज वीरधवल हर्ष के आवेश में राजकुमारी के नजदीक आ उत्सुकता से पूछने लगे-प्यारी , पुत्री मलया! तू इस काष्ठ स्तंभ में कब और कैसे आ गई?

शुभाशुभ कर्म के परिणाम को जाननेवाली, और इसी कारण पिता को नहीं, परन्तु अपने ही अशुभकर्म को दोष देने वाली मलयासुन्दरी ने पिता की ओर स्नेहभरी दृष्टि से देखते हुए उत्तर दिया - पिताजी! जिनकी कृपा से मैं जीवित रही हूँ, वह कुल देवी ही इस बात को जानती हैं।

कुमारी को पहले के समान ही बोलती हुई देख तमाम राजकुटुम्बी उसके पास आकर प्रेम गर्भित शब्दों में कहने लगे - कुमारी! हम तुम्हें याद ही करते थे, कि क्या हम इन नेत्रों से अब फिर तुम्हारा दर्शन कर सकेंगे? आज अकस्मात् ही आशा लगाये हुए चातक को शान्ति देनेवाले मेघ के समान तुम्हारा दर्शन बड़े पुण्य से प्राप्त हुआ है।

चंपकमाला -(हर्ष के अश्रु नेत्रों से) प्यारी पुत्री! मैं तुम्हारी माता होने पर भी सचमुच तुम्हारी दुश्मन बन गयी थी। बेटी! ऐसा घोर दुःख तुमने कैसे सहन किया होगा? निर्दोष पुत्री! अपने अज्ञानी माता पिता के इस घोर अपराध को क्षमा करना।

राजा - विनीत पुत्री! तेरे अन्धकूप में गिरते ही हमारी कुलदेवी ने तुम्हारी रक्षा कर तुझे योग्य वर की प्राप्ति हो इस हेतु से राजकुमारों के बलकी परीक्षा के लिये इस स्तंभ में रक्खा है ऐसा मालूम होता है। कनकवती के पास से यह लक्ष्मीपुंजहार वापिस लेकर तेरे गले में पहिना,

दिव्य वस्त्रों से श्रृंगारित कर हाथ में वरमाला देती हुई उस कुलदेवी ने ही तुझे विभूषित किया है। बेटी! जिस काष्ठस्तंभ के भीतर से तू प्रगट हुई है यह, स्तंभ इस पाणिग्रहण महोत्सव के प्रसंग पर हमें आज ही प्राप्त हुआ है। यह तमाम वृत्तान्त हमें एक सिद्धज्योतिषी ने बतलाया था, परन्तु हमारे कुल की रक्षा करने वाली कुलदेवी ने हमें आज तक कभी स्वप्न में भी यह बात नहीं बताई। न जाने इसका क्या कारण होगा? कदाचित् संभव है उस सिद्धज्योतिषी के रूप में ही कुलदेवी ने हमारी सहायता की हो। मलयासुन्दरी मुस्कराती हुई मन में सोचती है कि यह कर्तव्य कुलदेवी का है या कुलदीपक का है यह इनको क्या मालूम?

मंत्री! सिद्धज्योतिषी की तमाम बातें सिद्ध ही हुई। परन्तु एक ही बात मेरे हृदय में खटकती है। उसने कहा था कि राजकुमारी का पाणिग्रहण महाराज सूरपाल का पुत्र महाबल कुमार करेगा यही बात अन्यथा प्रतीत होती है। हमारी की हुई प्रतिज्ञा के अनुसार महान् और दिव्य स्तंभ को इस तेज़स्वी वीणा बजानेवाले युवकने विदारित किया है, इसलिये कुमारी का पति भी यही होना चाहिये। महाराज बीरधवल के इन अन्तिम वचनों को पास में ही खड़ा हुआ महाबल ध्यान पूर्वक सुन रहा था। इसी समय स्तंभ संपुटके बीच खड़ी हुई मलयासुन्दरी के पास कई सखियां आ पहुँची, और उन्होंने मलयासुन्दरी को सहारा दिया। आगे बढ़कर मलयासुन्दरी बोली - दासी! कलानिधान वह वीरपुरुष कहाँ है? जिसने इस स्तंभ को विदारण किया है। मैं उसके गले में वरमाला पहनाऊंगी। मलयासुन्दरी की धायमाता वेगवतीने नजदीक में आकर स्तंभ को विदारण करने वाले उस वीर युवक की ओर इशारा किया। प्रेमपूर्ण नेत्रों से निहारती हुई, अनेक राजकुमारों के मनोरथ निष्फल करती हुई, लोगों के चित्त को संतोष देती हुई, गंधर्व के वेष में रहे हुए, तथापि कामदेव के समान रूपवान् महाबल कुमार के गले में मलयासुन्दरी ने हर्षित हो, वरमाला पहना दी। मलयासुन्दरी के रूप से चकित हो, और गंधर्व जाति के युवक के गले में वरमाला आरोपित होने से पराभव पाये हुए राजकुमार परस्पर कहने लगे - देखो! इस विदग्धा राजकुमारी को उत्तम क्षत्रिय वंश के राजकुमारों को छोड़कर अज्ञात कुलवंशीय वीणा

बजानेवाले साधारण मनुष्य के गले में वरमाला डाल दी! इस प्रकार हम अपना घोर अपमान नहीं सह सकते। हम इस गंधर्व को मारकर स्वयंवरा को ग्रहण करेंगे। इस तरह विचार कर मारे ईर्ष्या के वे सब राजकुमार गंधर्व के वेष में वहाँ पर अकेले खड़े हुए महाबल की तरफ बढ़ आये। यह देख महाराज वीरधवल ने उस युवक की रक्षा के लिये उसके चारों तरफ अपनी सेना खड़ी कर दी।

इस समय महाबल कुमार भी स्वयंवर में रखे हुए बज्रसार धनुष को उठाकर उन राजकुमारों के सामने आ डटा। महाबल के अमोघ प्रहारों से वे तमाम राजकुमार अपने प्राण बचाने के लिये चारों तरफ बिखर गये।

उस वक्त स्वयंवर मंडप के प्रसंग पर पृथ्वीस्थानपुर से स्वाभाविक रूप से आये हुए एक चारण ने ध्यानपूर्वक देखने से महाबल को पहचान लिया, और वह उच्च स्वर से बोल उठा - हे महापराक्रमी सूरपाल नरेश के पुत्र-महाबल-कुमार! आपकी सदा विजय हो। उस चारण के ये शब्द सुनते ही महाराज वीरधवल की खुशी का पार न रहा। वह विचारने लगे कि क्या सचमुच ही गंधर्व के रूप में यह महाबल कुमार ही है! ठीक है साधारण जाति में उत्पन्न होनेवाले गंधर्व युवक में ऐसा प्रबल पराक्रम कैसे हो सकता है? यह विचार कर शीघ्र ही चारण के पास आ राजा ने उससे पूछा - क्या तू इस कुमार को पहचानता है? चारण ने हाथ जोड़ नम्रता से कहा-महाराज! मेरे कथन में जरा भी संदेह नहीं, मैंने बचपन से ही इन्हीं के राजकुल में वृद्धि पाई है। सचमुच यह महाराज सूरपाल का पुत्र महाबल-कुमार ही है। राजा हर्षपूर्वक बोल उठा-अहा! अकस्मात् यह अनभ्रा-वृष्टि हुई! जो कार्य मन से भी दुष्कर प्रतीत होता था, वह इस समय प्रत्यक्ष क्रिया में आ गया। सिद्धज्योतिषी का कथन पूर्ण सत्य हो गया। सच कहा है, अचल-पर्वतों के चलायमान होने पर भी ज्ञानवान पुरुषों के वचन अन्यथा नहीं होते। परन्तु यह कुमार अकेला ही कैसे आया होगा? क्या यह अकस्मात् आकाश मार्ग से आ गया? मुझे इस बात को जानने से भी अधिक आश्चर्य उस परोपकारी सिद्धज्योतिषी को जानने का है जिसके प्रताप से तमाम कार्य सिद्ध हुए । इसके बाद

दर्शन भी नहीं हुए। न जाने वह देव-पुरुष हमारी तमाम इच्छाओं को पूर्णकर कहां चला गया?

कुछ देर विचार कर महाराज वीरधवल ने यह निश्चय किया कि इस वक्त इस चिन्ता की आवश्यकता नहीं। कुछ समय के बाद राजकुमार के मुख से ही यह तमाम बातें सुनूंगा। इस वक्त जिस कार्य में विलम्ब हो रहा है पहले उसे करना चाहिये। यह सोचकर राजा वीरधवल शीघ्र ही युद्ध के लिये तैयारी करते हुये उन राजकुमारों के पास आया और उन्हें यह विश्वास दिलाया कि वह वीणा बजानेवाला और कन्या के हाथ से वरमाला पहननेवाला युवक गंधर्व नहीं परन्तु पृथ्वीस्थानपुर के नरेश महाराज सूरपाल का पुत्र तेजस्वी महाबल कुमार है। इत्यादि वचनों से समझाकर, उन्हें युद्ध के प्रसंग से बचा लिया। एवं वापिस आकर कुमार और राजकुमारी मलयासुन्दरी को भोजन कराया। अन्य स्वजनों को जिमाकर स्वयंवर में आये हुए तमाम राजकुमारों के लिये भी उनके स्थान पर ही भोजन का प्रबंध करा दिया।

इस शुभ प्रसंग पर सिद्धज्योतिषी को प्रीतिदान देकर प्रसन्न करने के लिये राजा ने उसकी चारों तरफ तलाश कराई। परन्तु उसका कहीं पर भी पता न लगा। उससे राजा ने यह विचार किया कि वह सचमुच ही परोपकारी दिव्य पुरुष था, अब उसके मिलने की आशा नहीं है। तब उसने विधि-पूर्वक अपनी कुलदेवी की पूजा कर बन्धुवर्ग को वस्त्राभरण आदि दे कर संतुष्ट किया। याचक जनों को भी दान देने में उसने अपनी लक्ष्मी का खूब ही उपयोग किया। राजकुमारी के विवाह के हर्ष में नगर में जगह-जगह उत्सव मनाया जा रहा था। अनेक प्रकार के बाजों की मधुर ध्वनि से आकाश गूंज रहा था। कहीं पर मधुर स्वर से गन्धर्व लोगों का संगीत हो रहा था, कहीं पर मारे खुशी के स्त्रियों का नृत्य होता था, कहीं कोकिल कंठ से सधवा स्त्रियां धबलमंगल गा रही थीं। कहीं पर भाट चारणों के जय-जय शब्द उच्चारित हो रहे थे, अनेक आभूषणों से भूषित दोनों वर-वधू कल्पलता और कल्पवृक्ष के समान शोभा पा रहे थे। पाणिग्रहण के समय उज्ज्वल नेपथ्य को धारण करने वाला वह दम्पति युग्म साक्षात् रति और कामदेव के समान शोभायमान दीख रहा था।

क्रमशः

हस्तिनापुर

श्री अमरचन्द्र, एम० ए०

भारतका प्राचीनतम व प्रसिद्ध नगर हस्तिनापुर वर्तमान मेरठ जिले की मवाना तहसील में एक परगना है। यह स्थान मेरठ शहर के करीब २२ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां की सड़क अब पक्की बन गई है और उत्तरप्रदेशीय सरकारने वहां तक जाने कि लिये मोटर का प्रबन्ध कर दिया है।

हस्तिनापुर नगर को वसुदेवहिंडी नामक ग्रंथ में भागीरथी गंगा के किनारे बताया गया है और विविधतीर्थकल्प में इसकी पुष्टि की गई है। परन्तु आजकल गंगा की दिशा बदल जाने से यह स्थान गंगा की पुरानी धारा पर स्थित है जिसको बूढ़ीगंगा के नाम से पुकारते हैं। वह गंगा की वर्तमान धारा से लगभग सात मील पश्चिम की ओर बहती है। इसे बूढ़ीगंगा के नाम से पुकारते हैं। वह गंगा की वर्तमान धारा से लगभग सात मील पश्चिम की ओर बहती है। बूढ़ीगंगा मुजफ्फरनगर जिले में फिरोजपुर गांव के पास गंगा से अलग हो दक्षिण की ओर बहती, गढ़मुक्तेश्वर के पास फिर उसी में मिल जाती है।

बूढ़ीगंगा कुछ झीलों की सहायता से हस्तिनापुर के पास एक द्वीप-सा बनाती है। प्रतीत होता है कि प्राचीन नगर किसी समय गंगाजी की बाढ़ में बह गया है, क्योंकि अब वहांपर कुछ टीले ही देखने को मिलते हैं। इसकी पुष्टि महाभारत से भी होती है, जहां पर वर्णन आता है कि किस प्रकार महाभारत युद्ध के करीब सौ वर्ष पश्चात् हस्तिनापुर गंगा की बाढ़ में बह गया।

जैन इतिहास - जैनग्रन्थों में आर्यक्षेत्र के २५।। देशों में कुरुदेश का भी नाम आता है, जिसकी राजधानी राजपुर (हस्तिनापुर) गिनाई गई है। विविधतीर्थकल्प में हस्तिनापुर का संस्थापक कुरुपुत्र हस्तिको बताया गया है । प्राकृत व संस्कृत ग्रन्थों में इस नगर के अनेक नाम मिलते हैं। जिनका अर्थ एक ही बैठता है -हस्तिका नगर। वसुदेवहिंडी में भारतवर्ष के कुरुजनपद में हस्तिनापुर नगर के राजा विश्वसेन का उल्लेख आता है, वे १६वें तीर्थंकर शांतिनाथजी के पिता थे।

बौद्धों के १६ महाजनपदों में भी कुरुजनपद का नाम आता है। इसका विस्तार ८००० योजन था। इसकी उत्पत्ति के विषय में "प्रपच्चसूदनी" में कहा गया है कि जम्बूद्वीप के चक्रवर्ती राजा मान्धाताने देवलोक के अतिरिक्त कई एक और देशों के साथ उत्तरकुरु को भी जीता था। वहां के बहुत से लोग मान्धाता के साथ जम्बूद्वीप में आ गये और जिस प्रदेश में वे लोग रहने लगे उसे कुरुरट्टम (कुरुराष्ट्र) के नाम से पुकारा जाने लगा।

जैन मान्यता के अनुसार यहां श्री शांतिनाथजी, श्री कुन्थनाथजी व श्री अरहनाथजी - क्रमशः १६वें, ६ठें, ७वें, चक्रवर्ती, के चारों कल्याणक - च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान यहीं पर हुए।

प्रथम तीर्थंकर, ऋषभदेव स्वामी ने दीक्षा के समय अपना राज्य बांटा था, तो बाहुबली को तक्षशिला और हस्तिनापुर का राज्य सौंपा। श्री ऋषभदेव दीक्षा के पश्चात् एक वर्ष तक विधि अनुकूल भिक्षा न मिलने से निराहार ही घूमते रहे। तब बाहुबली-पुत्र श्रेयांस कुमार ने इक्षुरस से उनका पारणा कराया था, और जहां पर उनके चरण पड़े थे, उस स्थान पर मणियुक्त स्तूप खड़ा कराया था। कहा जाता है कि इस काल में दान की प्रथा इसी कुमार ने प्रारम्भ की थी।

१९वें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ (मल्लिकुंवरी) भी हस्तिनापुर पधारे थे। श्वेताम्बरों की मान्यता के अनुसार वे जन्म से स्त्री थे, पुरुष नहीं और युवावस्था में इनसे विवाह करने के हेतु जिन छः राजाओं ने इनके पिता, मिथिला नरेश पर चढ़ाई की थी उनमें हस्तिनापुर का तत्कालीन राजा अदीनशत्रु भी था, पर मल्लिकुंवरी के उपदेश से उन सबने दीक्षा ले ली थी।

ऊपर लिखित चक्रवर्तियों के अतिरिक्त चौथे सनत्कुमार भी हस्तिनापुर में ही हुए थे। इनके पिता का नाम अश्वसेन और माता का सहदेवी था। अनन्त ऋद्धि प्राप्त होने पर उन्होंने संसार त्यागकर दीक्षा ले ली थी। आठवें चक्रवर्ती, सुह्रा भी, यहीं पर हुए, इनके पिता कृतवीर्य और माता तारा थीं।

जमदग्निपुत्र परशुराम भी हस्तिनापुर में हुए। इनकी माता का नाम रेणुका था। उन्होंने विद्याधर से परशुविद्या सीखी थी और अपने पिताके हत्यारे कृतवीर्य का वध किया। ये अत्यन्त क्रोधी थे। मान्यता

अनुसार इन्होंने २१ बार पृथ्वी को क्षत्रिय शून्य बनाया।

इस नगर में गंगादत्त नामक गृहपति रहता था। उसके पास सातकोटि स्वर्णमुद्राएं थी। उसने श्री सुव्रतस्वामी से दीक्षा ली और फिर ११ अंगों का अभ्यास किया। अन्त में एक मास की संलेखनाकर समाधिपूर्वक मर कर महाशुक्र नामक देवलोक में उत्पन्न हुआ।

यहीं ख्यातिप्राप्त कार्तिकसेठ हुआ, जिसने २० वें तीर्थंकर श्री सुव्रतस्वामी से अपने एक हजार आठ अनुयायियों सहित दीक्षा ली और १२ वर्ष तक चरित्रपालन करने के पश्चात् अन्त में एक मास की संलेखना करके मर कर प्रथम देवलोक का इन्द्र हुआ।

इसी प्रसिद्ध नगर में शिवराज नाम का राजा था। उसकी पटरानी का नाम धरणी था और पुत्र का शिवभद्र। अपने पुत्र को राज्यतिलक कर राजा वानप्रस्थ तापसी बन गये। तपस्या करने से उनको विभंगज्ञान हुआ। इसी समय महावीर स्वामी हस्तिनापुर में पधारे, राजा उनकी सेवा में उपस्थित हुआ और अपनी शंकाओं का समाधान करा, भगवान के उपदेश सुने, जिससे प्रभावित हो भगवान् के पास दीक्षा ले ली।

विवायसूयं में भीमकूटग्राह (शिकारी), उसकी पत्नी उप्पला, तथा पुत्र गोत्तासका हस्तिनापुर में होने का उल्लेख आता है। एक गृहपति सुमूह नामक भी यहां रहता था जिसने धर्मघोष से दीक्षा ली और साधु जीवन व्यतीत करते हुए स्वर्ग प्राप्त किया। इसी प्रकार प्राचीन जैनग्रन्थों में हस्तिनापुर से संबंधित अनेक व्यक्तियोंका उल्लेख मिलता है, जिससे हमारा यह निर्णय निकलता है कि प्राचीन कालमें हस्तिनापुर जैन-धर्म व संस्कृति का महान् केन्द्र था।

श्री जिनप्रभसूरि के विविध तीर्थकल्प के हस्तिनापुर, तीर्थस्तवन और हस्तिनापुर कालपसे ज्ञात होता है कि उनके समय में वहांपर श्री शांतिनाथजी, श्री कुन्थनाथजी, श्री अरहनाथजी और श्री मल्लिनाथजी के चार चैत्य तथा अम्बिका देवीका देवल था। जिनप्रभसूरि बादशाह मुहम्मद तुगलक से हस्तिनापुर की यात्रा का फरमान लेकर देहली गये और वहां से वाहडपुत्र वोहित्थ संघपति सहित हस्तिनापुर पहुंचे। आचार्यश्री ने वहां शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरहनाथ स्वामी की अभिनव मूर्तियों की मंदिरों में प्रतिष्ठा कराई और अम्बिका देवी की प्रतिमा भी

स्थापित कराई। संघपति ने गरीबों को वस्त्र, भोजन व ताम्बूलादि दान दिये।

उत्तराध्ययन सूत्र में एक कथा आती है:- हस्तिनापुर में पद्माहेर नामक राजा राज्य करता था। उसकी रानी का नाम ज्वाला था, उसके दो पुत्र विष्णुकुमार और महापद्म थे। बड़े पुत्र ने तरुण होते ही दीक्षा ले ली और उग्र तपादि द्वारा आकाशगमनादिं सिद्धियों को प्राप्त हुआ, राजा की मृत्यु के पश्चात् महापद्म ने राज्य सँभाला और वह विख्यात चक्रवर्ती राजा हुआ।

इसी समय उज्जयिनी में श्रीधर्म नामक राजा राज्य करता था, जिसका मंत्री नमुचि था, एक बार वहां पर मुनि सुव्रत स्वामी के शिष्य आचार्य सुव्रतसूरि विहार करते हुए पधारे, तो नमुचि अपनी विद्वता के घमण्ड में उनसे विवाद करने जा पहुँचा, पर निरुत्तर हो गया, चिढ़कर उसने मुनियों की हत्या का प्रयत्न किया, जिससे राजा ने कुंपित हो उसको मंत्री पद से अलग कर दिया और राज्य से निकाल दिया।

नमुचि वहां से हस्तिनापुर आया और महापद्म का मंत्रित्व स्वीकार कर लिया, इसी बीच पास के राजा सिंहबल ने कुरु प्रदेश पर चढ़ाई की। नमुचि ने उसको जीता और बांधकर महापद्म के सम्मुख उपस्थित किया। महापद्म अपने मंत्री से बहुत प्रसन्न हुए और उसको इष्टवस्तु मांगने को कहा, नमुचि ने कहा कि समय आने पर मांग लूँगा।

कुछ समय पश्चात् सुव्रताचार्य ने वर्षाकाल में हस्तिनापुर के एक उद्यान में चातुर्मास किया। आचार्य से बदला लेने का उपयुक्त अवसर देख नमुचि राजा के पास गया और वेदोक्त विधि से यज्ञ करने के लिये राज्य मांगा। राजाने अपने वचनानुसार प्रतिज्ञा का पालन किया और नमुचि का अभिषेक कर अन्तःपुर में चले गये। अभिषेक के पश्चात् जैन मुनियों को छोड़कर सभी लोग आशीर्वाद देने आये, जिससे नमुचि का क्रोध भड़क उठा। उसने मुनियों को सात दिन के भीतर राज्य छोड़ देने की आज्ञा दी और आज्ञा उल्लंघन पर मृत्युदण्ड की घोषणा की। पर वर्षाकाल में मुनि कहां जाते। उन्होंने परस्पर विचार-विमर्श किया और राजा महापद्म के बड़े भाई मुनि विष्णुकुमार, जो कि उस समय मेरुपर्वत पर थे, से नमुचि के क्रोध को शान्त करने में सहायता मांगी। विष्णुकुमार

ने आकर नमुचि से मुनियों को चातुर्मास पूरा होने तक हस्तिनापुर में ठहरने देने के लिये कहा। पर वह नहीं माना। तब उसने नमुचि से तीन पग भूमि मांगी और अपना शरीर बढ़ाकर एक लाख योजन का कर लिया। उसने प्रथम पग पूर्व समुद्र पर, दूसरा पश्चिम समुद्र पर और तीसरा नमुचिके सिर पर रखा जिससे कि उसकी मृत्यु हो गई। इस घटना से मुनि विष्णुकुमार का नाम त्रिविक्रम प्रसिद्ध हुआ, महापद्म ने भी राज्य छोड़ दीक्षा ले ली और अन्त में मुक्ति को प्राप्त हुआ।

आधुनिक स्थिति - आजकल वहाँ पर वर्तमानकाल के बने कुछ मंदिर देखने को मिलते हैं। उनमें मुख्य दो जैन मंदिर हैं जो कि पास ही आमने-सामने बने हुये हैं। उनमें से एक तो विशाल मंदिर दिगम्बरों का है, जो कि करीब २०० वर्ष पूर्व देहली के सेठ सुगनचन्द ने बनवाया था। दूसरा मंदिर श्वेताम्बरों का श्री शांतिनाथ का है, जो कि छोटा होते हुए भी भव्य है। कार्तिक शुक्ल पूर्णिमाको गढ़मुक्तेश्वर के गंगा स्नान के अवसर पर यहां दिगम्बरों का एक बड़ा भारी मेला प्रतिवर्ष लगता है। और मार्गशीर्ष वदि प्रतिपदा को सोने का रथ निकलता है जिसका दृश्य इतना रमणीय होता है कि बस देखते ही बनता है। मंदिरों से लगभग एक मील उत्तर की ओर चार नसियांजी हैं, जिनमें श्री ऋषभदेव जी महाराज की चरण पादुकाएं हैं। एक छोटा-सा शिव मंदिर, पाण्डुकेश्वर महादेव के नाम से दक्षिण की ओर बना हुआ है। इसके अतिरिक्त और कई एक बड़े-छोटे मंदिर जीर्णावस्था में आसपास में देखने को मिलते हैं, जिनका अब कुछ विशेष महत्त्व नहीं रह गया है।

पिछले दो वर्षों में भारत सरकार के पुरातत्व विभाग ने वहां पर खुदाई का काम कराया है, जिसमें बहुत-सी महत्त्व की सामग्री प्राप्त हुई है। उत्खनन कार्य का पूरा विवरण, पुरातत्त्व विभाग की सरकारी रिपोर्ट में छपने से ही प्रतीत होगा।

क्रमशः

भगवान् महावीर

दीपावली जिनका परिनिर्वाण पर्व है

उपाध्याय अमरमुनि जी

आज से लगभग पच्चीस सौ वर्ष पूर्व भारत के एक महान् मनस्वी साधक, भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा के अन्तिम प्रतिनिधि, केशीकुमार श्रमण एक बार अन्धकार में भटकते और ठोकरें खाते जन-जन की करुणा से छलकते हृदय से चिन्तित हो उठे थेः

अन्धयारे तमे घोरे, चिठ्ठन्ति पाणिणो बहू
को करिस्सई उज्जोयं, सव्वंलोगम्मि पाणिणं।

आज चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार छा रहा है, भोली भाली जनता अन्धकार में भटक रही है। इस काल-रात्रि का अन्त कब होगा, और कौन सूर्य इस क्षितिज पर प्रकाश रश्मियाँ बिखेरता हुआ, संसार को आलोकित करेगा?

श्रमण केशीकुमार के इन वेदना विह्वल शब्दों में युग की पीड़ा और आकुलता बोल रही है, गहन अन्धकार में डूबी हुई जनता किसी दिव्य प्रकाश पुञ्ज की अपलक प्रतीक्षा में बार-बार पूर्वांचल की ओर आशा भरी नजरों से देख रही है।

अन्धकार को ध्वस्त कर प्रकाश अपना साम्राज्य फैलाता है। अधर्म को परास्त कर धर्म लोक-अभ्युदय की ओर बढ़ता है। विचारों की जड़ता, धार्मिक अन्धविश्वास और सामाजिक रूढ़ियों को नष्ट करने के लिए महान् क्रान्ति की आवश्यकता होती है। क्रान्ति का समय पक रहा था। मगध के विदेह जनपद में वैशाली के क्षत्रिय कुण्ड अधिपति राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के घर एक महान् विभूति ने जन्म लिया। वह पावन मास था चैत्र, पक्ष था शुक्ल और तिथि थी त्रयोदशी।

विभूति एक बीज के रूप में प्रकट होती है। आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक रूप में स्कन्ध, शाखा, प्रशाखा, पत्र, पुष्प और फलों की विराट् सत्ता अपने अन्तस्थल में संजोए हुए वह विभूति बीज के रूप में अवतरित हुई और अब नित्य नये विकास की ओर उसके चरण बढ़ने

लगे। माता पिता ने उसको वर्द्धमान नाम से पुकारा। वर्द्धमान - इस प्रिय, साथ ही सार्थक सम्बोधन के पीछे माता-पिता के हृदय में निहित सुन्दर भविष्य की असीम कल्पनाएँ, ऐश्वर्य एवं समृद्धि की अनन्त आकांक्षाएँ और जीवन की सम्पूर्ण महानता की सम्भावनाएँ उमड़ती हुई सी लगती हैं। वह सदा वर्द्धमान ही रहा। वर्द्धमान अर्थात् बढ़ता हुआ, विकासोन्मुख! अस्तु, वह जीवन की सम्पूर्ण श्रेष्ठता तक बढ़ता रहा स्वयं, और बढ़ाता रहा अपने परिवेश में आये मुमुक्षु जन-जन को।

महापुरुष और विश्व विभूतियाँ जन्म से कोई महान् अद्‌भुत एवं विचित्र नहीं होते। उच्च और पवित्र संस्कारों की भव्य-भूमि में ही उनके बीज छिपे रहते हैं। वर्द्धमान का बचपन सुकुमार फूलों की पहली अँगड़ाई थी। वर्द्धमान के तन का इठलाता हुआ स्वर्ण प्रभा-सा सौन्दर्य एक ओर दमकने लगा, तो दूसरी ओर मन की दमकती हुई महक आस-पास के वातावरण को महकाने लगी।

क्षत्रिय कुमार होने के नाते उनके मन में सहज शौर्य और पराक्रम की लहरें उठने लगीं। पराक्रम की कहानियों में यहां तक बताया गया है, कि एक बार कोई अभिमानी देव उनके साहस की परीक्षा के विचार से किशोर रूप धारण कर उनके क्रीड़ादल में सम्मिलित हो गया। खेल में वर्द्धमान के साथ हार जाने पर नियमानुसार उसे वर्द्धमान को पीठ पर बैठा कर दौड़ना पड़ा। किशोर रूपधारी देव दौड़ता-दौड़ता बहुत आगे निकल गया और अब उसने अपना विकराल रूप बनाकर वर्द्धमान को डराना चाहा। देखते ही देखते उस किशोर ने लम्बा ताड़ जैसा पिशाच रूप धारण कर लिया। किन्तु वर्द्धमान उसकी यह करतूत देखकर न घबराये और ना ही विचलित हुए। दृढ़ता के साथ उसकी पीठ पर एक ऐसा मुष्टि प्रहार किया, कि देवता मारे दर्द के चीख उठा, और तुरन्त अपना पिशाच रूप समेट कर वहीं पहले का नन्हा सा किशोर बन गया। आखिर देव भक्ति-विनम्र होकर क्षमा याचना की मुद्रा में वर्द्धमान के चरणों में झुक गया।

इस प्रकार अनेक घटना-चित्र बाल्य-काल के हैं, जो उनके क्षत्रियोचित महान् धैर्य, शौर्य और पराक्रम के भाव को उजागर कर रहे

हैं। आगे जाकर यही घटना उनके भाव जगत् में चरितार्थ होती है। विकारों के महादैत्य को वैराग्य के मुष्टि-प्रहार से परास्त करके वर्द्धमान महावीर बन जाते हैं। धैर्य, साहस, दृढ़संकल्प और अडिग निष्ठा देखकर संसार उन्हें महावीर के नाम से सम्बोधित करने लग जाता है।

बचपन यौवन की चौखट पर पहुँचता है, पर न उसमें मर्यादाहीन उन्माद है, न भोग लिप्सा है और न विह्वलता है। माता-पिता के आग्रह पर विवाह होता है, यशोदा जैसी दिव्य सुन्दरी गृहलक्ष्मी बनकर आती है, किन्तु वर्द्धमान गृहजीवन में आबद्ध होकर भी उससे उन्मुक्त रहते हैं, उसमें डूबते नहीं हैं। यौवन का भोग वैराग्य में बदलने लगता है, संकल्प विश्व-कल्याण की भावनाओं से ऊर्ध्वगामी बनना चाहते हैं। अस्तु, एक ओर शान्ति और करुणा का निर्मल स्रोत उद्दाम वेग से फूट निकला, तो दूसरी ओर विश्व को आलोकित करने वाले दिव्य ज्ञान की प्रकाश किरणें जगमगाने लगीं।

संसार की समस्त भौतिक विभूति, वैभव और समृद्धि उनके चरणों में लोट सकती थी। अनन्त पराक्रम और बाहुबल उन्हें चक्रवर्ती सम्राट् बना सकता था। किन्तु महावीर की दृष्टि में यह तो एक तुच्छ बात थी। उनका जन्म किसी के सुख एवं ऐश्वर्य को लूटने के लिए नहीं हुआ था; वह हुआ था संसार को जीवन दान देने और सबको सुखी बनाने के लिये। किसी को दास बनाकर सम्राट् बनने के लिये उनका अवतार नहीं हुआ था; वह हुआ था प्रत्येक दीन-हीन प्राणी को अनन्त आध्यात्मिक वैभवशाली आत्मा का स्वतन्त्र सम्राट् बनाने के लिये।

जीवन के अठ्ठाईस वसन्त माता-पिता की सेवा में बिताकर उन्होंने जीवन के सबसे प्रथम और उत्कृष्ट कर्तव्य का पालन किया। एक भाई, भाई के साथ किस प्रकार रहता है, छोटे भाई की बड़े भाई के प्रति क्या भावना है,? बस इसी की पूर्ति के लिए वे दो साल तक बड़े भाई नन्दी वर्द्धन की सेवा में भी रहे। इस प्रकार कुल तीस वर्ष के युवा क्षत्रिय कुमार महावीर अब उस महा प्रकाश की ओर अभिनिष्क्रमण करके चल पड़े, जो स्वपर के कल्याण का एवं विश्व के मंगल का सर्वोत्तम साधना पथ है। अपने अधिकार की सम्पत्ति और वैभव दीन

दुःखियों को दान कर, वे सिर्फ शरीर ढकने भर को एक वस्त्र रखकर स्वयं प्रव्रजित हो गए। मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष की वह दशमी तिथि थी, जब जैन जगत् के अन्तिम होनहार तीर्थंकर ने विराट् देवमानव-समूह के बीच यह उद्घोष किया कि - **सव्वं में अकरणिज्जं पाव कम्मं** - आज से सब पाप कर्म मेरे लिए अकृत्य हैं।

लाखों देव और मानव निश्चल भाव से देख रहे थे, कि वह वैभव और ऐश्वर्य में पला राजकुमार आज अकिन्चन होकर, देह पर सिर्फ एक वस्त्र धारण किए, मात्र आत्महिताय ही नहीं, बल्कि सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय अकेला, शान्त और निस्पृह, साधना के कंटकाकीर्ण मार्ग पर निकल पड़ा है।

साधना से सिद्धि मिलती है। महावीर ने अब जीवन को ब्रह्मचर्य और तप की उग्र साधना में झोंक दिया। सत्य के व्याख्याता बनने से पहले वे मूक चिन्तक बने, गम्भीर अन्वेषक बने। अपने ही अन्तर की गहराईयों में उतरकर सत्य का दर्शन किया. आत्म-साधना के उपदेष्टा बनने से पहले वे स्वयं उत्कृष्ट आत्म-साधक बने, स्व-स्वरूप की अनुभूतियों को जगाया, तपश्चरण की एक-एक प्रक्रिया को जीवन के संस्पर्श से छूकर परखा।

साधनाकाल में वे शान्त, एकान्त, निर्जन स्थानों में जाकर ध्यान में अचल खड़े हो जाते, चिन्तन में गहरे उतर जाते। उनके इस कठोर और विस्मयकारी साधक रूप पर किसी ने श्रद्धा के कुसुम चढ़ाए तो किसी ने उन पर क्रूर प्रहार भी किये। अज्ञान ग्वाल बालों ने उन्हें त्रास दिया सो दिया, किन्तु संगम जैसे देवताओं ने भी छह-छह मास तक उनका पीछा किया। संगम देव ने हर प्रकार की संभव असंभव यातनाएं देकर उस तपस्वी को साधना पथ से विचलित करने का प्रयत्न किया किन्तु जब वह अपनी समस्त कुचेष्टाओं में असफल हो गया, तो एक दिन महावीर के समक्ष आकर खड़ा हुआ; और तब उस करुणावतार की आँखों में अनुकम्पा का अमृत छलक उठा- संगम ! मेरे मन में रह-रह कर एक ही वेदना की कसक उठ रही है, कि तुम्हारे छह महीने तक लगातार कष्ट देने पर जहाँ मेरी साधना अग्नि-परीक्षा में निखर कर तेजस्वी बनी है, वहाँ मेरे निमित्त से तुम्हारा अनिष्ट हुआ है, जीवन कलुषित हुआ है।

बस, यही एक विचार मेरे मन को द्रवित कर रहा है। वज्र सी कठोर साधना और फूल सा कोमल हृदय। मेरु सा अडिग धैर्य और नवनीत-सा द्रवित उदार मानस! यही है उस लोकोत्तर पुरुष की लोकोत्तर तपः साधना, जो आर्य सुधर्मा के स्वरों में इस प्रकार मुखरित हो रही है-

जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे,
नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे।
खोदोदए वा रस वेजयंते
तवोवहाणे मुणि वेजयंते।।

महावीर की यह उग्र साधना जैन तीर्थंकरों के जीवन में सबसे कठोर और उग्र थी। इतिहासकार आचार्यों ने बड़े गौरव के साथ उसको-**उग्गं च तवोकम्मं विसेसओ वद्धमाणस्स** - कहते हुए अभिनन्दन किया है। बारह वर्ष और छः मास के इस साधना काल में महावीर ने अनेक दीर्घ तपश्चर्याएँ कीं। दीर्घ और दीर्घतर मौन एवं ध्यान में लीन रहे। अन्तर्मुख होकर आत्म-गवेषणा की। तितिक्षा और इन्द्रियदमन के आश्चर्यकारी प्रयोग किये और इन सब साधना की प्रक्रियाओं के माध्यम से अन्तरं शोधन करते हुए एक दिन उस अनन्त सत्य के दर्शन कर लिए, उस महाप्रकाश को पा लिया-जिसके लिए यह सब घोर तपश्चरण किया-जस्सट्ठाए कीरई नग्न भावं। वह दिन और वह स्थान भारतीय इतिहास के स्वर्ण पृष्ठों पर अक्षरारूढ़ हो गए, जिस दिन और जहां पर महावीर ने उस अनन्त ज्योति के दर्शन किए थे। दर्शन ही नहीं, स्वयं ही ज्योतिर्मय बन गए थे, अल्पज्ञ से सर्वज्ञ बन गए थे। वह जंभिया ग्राम के बाहर कल-कल निनाद कर बहती हुई ऋजु बालुका नदी का शान्त एवं पवित्र तट, अपनी स्मृतियों में एक महान् तपस्वी की तपः साधना की सिद्धि का उज्ज्वल इतिहास सँजोए आज भी कितने मनोरम लग रहे होंगे ये सब!

महावीर सर्वज्ञ बन गए, साधना का नवनीत उन्हें प्राप्त हो गया। आकाश में देव दुन्दुभि बज उठी। लाखों-करोड़ों, देव, यक्ष, किन्नर, पुष्प वर्षा करते हुए महावीर के चरणों में आ-आकर एकत्र होने लगे। इसलिये कि जो अनन्त प्रकाश जगमगाया है, उसकी एक किरण के भी दर्शन हो सकें, और जो अमृत उन्हें प्राप्त हुआ है, उसकी एक बूंद का संस्पर्श भी

पा सकें, तो धन्य हो उठेंगे।

बारह वर्ष की सुदीर्घ साधना के बाद आज महावीर का प्रवचन-मौन मुखरित हुआ था। पहला प्रवचन था सर्वज्ञ का; पर आश्चर्य कि उसमें एक भी व्यक्ति धर्मतीर्थ में न आ सका। भगवान् की पहली देशना, कहते हैं, असफल रही। पर, क्या उससे किसी भी अंधकार में भटकने वाले को प्रकाश नहीं मिला? क्या कोई भी मिथ्यात्त्व के गर्त से निकलकर सम्यक्त्व के शिखर की ओर नहीं बढ़ा? जरूर प्रकाश भी मिला होगा, सम्यक्त्व की ओर भी बढ़े होंगे और इस दृष्टि से वह देशना असफल नहीं रहीं। किन्तु महावीर सर्वज्ञ ही नहीं, तीर्थंकर भी थे और जब तक श्रमण-श्रमणी, श्रावक-श्राविका रूप धर्म तीर्थ की विधिवत् स्थापना नहीं हो जाती, तीर्थंकर कैसे कहला सकते थे? बस इसी दृष्टि से संभव है, वह देशना निष्फल गई हो, और जैन इतिहास में यह एक महान् आश्चर्य मान लिया गया हो।

भगवान् महावीर जंभिया ग्राम से मध्य पावापुरी में पधारे। समवसरण की रचना हुई। विशाल मानव-मेदिनी एकत्र हुई। सुर और असुर सभी देव उपदेश सुनने को उपस्थित हुए। और तभी आए एक दिग्गज विद्वान, सर्वशास्त्र पारंगत इन्द्रभूति गौतम! प्रभु की तेजोदीप्तमुखमुद्रा ने पहले ही क्षण इन्द्रभूति को खींच लिया, और जब प्रभु की वाणी में स्वतः उनके मानसिक सन्देह का निराकरण हुआ, तो वे श्रद्धा से गद्‌गद् हो उठे। प्रभु ने इन्द्रभूति की चिन्तन धारा को नया मोड़ दिया, अनेकान्त की दृष्टि दी, सत्य को समझने के नये मान और विधान दिए। बस, इन्द्रभूति का समस्त तत्त्वज्ञान उस सत्य दृष्टि के संस्पर्श से सम्यक् ज्ञान बन गया। द्वादशांगी के गहन ज्ञान की कुन्जी प्रभु ने इन्द्रभूति के हाथों में सौंप दी। सिर्फ तीन ही पद में-**उप्पन्नेई वा विगमेई वा धुवेई वा** विश्व के प्रत्येक जड़ चेतन पदार्थ, पर्याय दृष्टि से प्रतिक्षण उत्पन्न होते रहते हैं, मिटते रहते हैं, किन्तु इस उद्‌भव और विनाश के बीच जो पदार्थ की तत्त्व रूप में सदा सर्वदा ध्रुव बनाए रखने वाली कड़ी है, वह है - द्रव्यत्वेन ध्रौव्य। इस प्रकार उत्पत्ति, स्थित और विलय की यह त्रिपदी वामन-रूप धारी विष्णु के तीन पाद की तरह विश्व के समग्र तत्त्वज्ञान को नापने वाली सिद्ध हुई।

इन्द्रभूति गौतम के मन की गाँठ खुली तो हजारों, लाखों की गाँठें खुल गई, खुलती ही गई। सत्य का महास्वर गूँज उठा। दया और करुणा की बसन्ती बयार ने सबके अन्तस्थल को शान्त और परितुष्ट कर दिया। यज्ञ और पशुबलि के विरुद्ध महावीर ने कहीं भी संघर्ष का मोर्चा नहीं खोला, किन्तु उनकी दयामृत से आप्लावित वाणी का अमर संदेश जहां भी पहुँचा वहीं दया का स्रोत उमड़ पड़ा। जनता की भावनाएँ बदलने लगीं। यज्ञ-यागादि धर्म के नाम पर चलने वाले आडम्बरों की दीवारें जीर्ण-शीर्ण हो चुकी थीं, उनकी नींव पहले ही उठी थीं, उन्हें गिराने के लिए सिर्फ एक तीव्र धक्के की और जरूरत थी, और वह काम किया महावीर की करूणामयी वाणी ने और उनकी आदर्श जीवन-चर्या ने।

कुछ तथाकथित विद्वान् श्रमण ब्राह्मण को अहिनकुल की विरोध कोटि में रख देते हैं। पर, नहीं समझते कि यह क्यों और किस उद्देश्य से कहा गया है? जैन धर्म और तत्त्वज्ञान का पहला सूत्र किसने समझा? एक ब्राह्मण विद्वान् ने। वर्तमान जैन तत्त्वज्ञान का आदि सूत्रधार तो वही ब्राह्मणकुमार है। श्रमण परम्परा का सबसे पहला यात्री वही ब्राह्मण पुत्र है, फिर समझ में नहीं आता कि कैसा है यह द्वन्द्व एवं विरोध का भ्रम? और क्यों है यह अनर्गल भ्रान्ति?

भगवान् महावीर की देशना ने सुप्त आत्माओं को जगाया, भटकते हुए पथिकों को मार्ग दिखाया, और फलस्वरूप चतुर्विध संघ की स्थापना हुई। उस संघ की आधार भूमि कितनी स्पष्ट और कितनी सुदृढ़ थी, जो हजारों हजार वात्याचक्रों के गुजरने के बाद आज भी अपना अस्तित्व सुरक्षित रखे हुए है। आत्म-विजय, व्रत, विनय, अहिंसा, मैत्री, शील और समभाव-यही तो सुदृढ़ स्तम्भ थे उनके इस महान् संघ-प्रासाद के। चतुर्विध संघ को प्रभु ने इन्हीं तत्त्वों पर आचरण करने का आदेश दिया था। भगवान् महावीर के श्रमण संघ का आधार भौतिक नहीं, आध्यात्मिक है। वह भय और प्रलोभन के बल पर नहीं, अपितु प्रेम, करुणा और आत्मजागरण के बल पर आगे बढ़ता है और विश्व को अखण्ड आत्मबोध का सर्वमंगल सन्देश देता है।

भगवान महावीर का जीवन सक्रिय जीवन था। वे महाकाल के प्रवाह में बहते हर क्षण को जीवन की अमूल्य थाती मानते थे। इसीलिये

वे कहते रहे हैं - **समयं गोयम मा पयायए** - समय मात्र भी प्रमाद मत करो। उन्होंने जीवन के तीस वर्षों में जो किया, वह हजारों लाखों वर्षों के इतिहास को बदलने में समर्थ हुआ।

विचारों के क्षेत्र में अनेकान्त की दृष्टि, जीवन के सत्यों को समझने की दृष्टि है। कर्मवाद जीवन और जगत् की गहन गुत्थियों को सुलझाने वाली एक महान् कला है, जो महावीर के तत्त्व-चिन्तन ने हमें दी है।

जीवन के विचार पक्ष से भी अधिक महत्वपूर्ण है आचार पक्ष। आचार की पवित्रता और विशुद्धि के लिए प्रभु ने अहिंसा और अपरिग्रह का संदेश दिया। क्रूरता और संग्रहवृत्ति सगी बहनें हैं। जहां संग्रहवृत्ति है, वहाँ उसके अर्जन और रक्षण के लिए क्रूरता का जन्म होता है और जीवन के समस्त दोषों एवं दुर्गुणों का आविर्भाव भी वहीं होता है। करुणावतार महावीर ने इन्हीं दोनों दोषों को जीवन की अशुद्धि का मूल मानकर दया और संतोष अथवा अहिंसा और अनेकान्त का संदेश दिया।

सामाजिक जीवन की उपेक्षित शक्ति नारी के नवजागरण का अभियान महावीर ने पुनः प्रारम्भ किया। आर्या चन्दना के नेतृत्व में उन्होंने नारी जाति में ज्ञान, शिज्ञा, सद्भाव और तपस्या का जो महान् अभियान तत्कालीन समाज को दिया, वह केवल सामयिक सामाजिक क्रान्ति ही नहीं, अपितु एक महान् शाश्वत धर्मजागृति भी थी।

सामाजिक जीवन में परस्पर सद्भाव और प्रेम का वातावरण बनाने के कुछ ऐसे उदाहरण भगवान् महावीर ने रखे हैं, जो बहुत ही प्रेरक एवं मार्गदर्शक हैं। राजाओं के विग्रह, समाज के कलह और मनमुटाव के प्रसंगों की जड़ को भी उन्होंने बड़ी सूक्ष्मता से पकड़ा और उसके कुपरिणामों से मानव जाति को उबारा।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta-700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,Resi; 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta-700 020
Ph: 247-6874,Resi: 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta -700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box: 16127, Cal-17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph: (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (R) 218-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram: Sudera

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H.M.T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Calcutta - 700 007
Phone: 239 7607

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Ph: 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Ph: 236-3028, 237-4039

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Ph: (O) 244-1309, (R) 475-7458

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Ph: Shop -227-1857 (R) 238-0026

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph: 282-4649, Resi: 247-2670

MANI DHARITAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P. V. C. Insulated Wires and Cables.
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph:(O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile: 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178,25778,25779
Fax: 05414-25378 (U. P.) 0151-61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Ph: 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Ph: 2477450/5264

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Ph: Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile: 98 3102 8566
Resi: 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi: 464-2783

APRAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
Email : Suravee @cal2. vsnl. net in
sona @ cal3. vsnl. net in

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta - 700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta - 69
Ph: 248-1533,248-0046

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Ph: 476-1533

MOTILAL BENGANI CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Ph: 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M. D. DND, M. R. C. O. G. (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Ph: 474-8008

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta - 700068
Ph: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1, M. G. Road, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950
(Fact). 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Ph: 2353902/2759
Fax: 033-2353902

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-5146/6941, Mobile: 9830032021
Fax: 91(33)2420588

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph: 238-7281, 230-1739

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Ph: (O) 348 8576/0669/1242
Resi: 225 5514, 237 8208, 229 1783

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI
CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Ph: 239 6205/9727

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-4730/6256/9867, Direct: 248-6477/6169
Resi: 478-0765/458-3397, Mobile: 98300-30618
Fax: 248-6169

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Ph: 2352076, 2355701

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013
Ph: 244-4436

R. K. KOTHARI
N. I. Corporation
Photographic, Heavy & Fine Chemicals
44c, Indian Mirror Street, Calcutta-700 013
Phone: 245-5763/64/65
D: 245-5766, Fax: 91-33-2446148

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

A. K. CHHAJER
Chhajer & Company
Chartered Accountants
230 A Masjid Moth
South Extension Part-II
New Delhi-110049

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला
१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़
कलकत्ता - ७०० ०७१

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीसी पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी
कलकत्ता

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of puming stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in places where Columbus would have feared to tread)

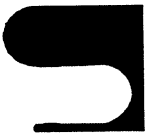

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITHNATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta 700016 Ph:(033)245 7562. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi 110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011)684 6003. Regional Office:8/2 Lisoor Road, Bangalore 560 042, Ph: (080)559 5508-15, Fax: (080) 559 5580.

Laying pipelines across one of the nation s driest regions, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreshwar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of paradip

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

BOTHRA SHIPPING SERVICES

2, CLIVE GHAT STREET,
(N. C. DUTTA SARANI)
2ND FLOOR, ROOM NO. 10,
CALCUTTA - 700 001
Fax No. 220-6400
Phone: 220-7162
Email : sccbss @ cal2. vsnl. net in

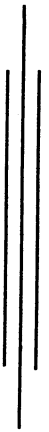

**Steamer Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors**

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone: 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 6346441/6446442
Fax: 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।
Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.
Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta, 700 017
Telegram: 'Hindogen' Calcutta
Phone: (033) 242-8399/8330/5443

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
Iron Ore and Manganese Ore Mines
In Orissa

S.G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।
Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940
BHANSALI
Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayaputi, Phase-1, New Delhi-110064
Phone: 5144496,5131086,5132203
Fax: 91-011-5131184
E-mail: Laxman. jariwala @ gems. vsnl. net. in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin-742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No. : 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence,
Coal India, CESC, Railways,
Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short
Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English:

1.	Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3-6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7-8)		150.00
	Vol -4 (satakas 9-11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Calcutta; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunaya.}	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Lalwani and S.R. Benerjee - Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00

Hindi

6.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumar Begani	Price Rs.	40.00
7.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti ki Kavita. translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
8.	Ganesh Lalwani - Nilanjana translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
9.	Ganesh Lalwani - Candana-Murti translated by Shrimati Rajkumari Begani.	Price: Rs.	50.00
10.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price: Rs.	60.00
11.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat,	Price: Rs.	45.00
12.	Ganesh Lalwani Pancadasi.	Price: Rs.	100.00
13.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price: Rs.	30.00

Bengali:

14.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price: Rs.	40.00
15.	Ganesh Lalwani-Sraman Samskrti Kavita.	Price:Rs.	20.00
16.	Puran Chand Shyamsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price.Rs.	15.00
17.	Satya Ranjan Bandyopadhyay-Prasnottare Jaina-dharma	Price:Rs.	20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
Vol. XXIV No. 7 TITTHAYARA October 2000
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्‌गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225